RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

महात्मा फूले के सामाजिक परिवर्तनवादी विचारोंकी दृष्टि से विश्लेषण

प्रा.राजेंद्र ननावरे,
सहा. प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
आ.शशिकांत शिंदे महाविद्यालय मेढा,
सातारा. (महाराष्ट्र)

19 वीं सदी में भारतीय समाज में वैचारिक प्रबोधन का प्रारम्भ माना जा सकता है। प्राचीन काल से देश में अन्धविश्वास, रुढी–परम्पराएँ, रीतिरिवाज, कुप्रथाओं ने भारतीय समाज जीवन को अपाहिज बनाया था। ईश्वर, देवी–देवताओं का बोलबाला इतना बढ गया था कि पंडितोंने सर्वसामान्य जनता का जीवन जीना बहुत कठीन किया था। जाति व्यवस्था के कारण दलित वर्ग का शोषण हो रहा था। महात्मा ज्योतिबा फूले नामक महापुरुष ने सैंकडो वर्ष अंधकार में जीवन जी रहे भारतीय समाज को ज्ञान का दीप दिखाकर अपने जीवन की सार्थकता सिद्ध की। ऐसे युगपुरुष महात्मा ज्योतिबा फूले की 28 नवम्बर 2013 के दिन 123 वीं पुण्यतिथि इस अवसर पर उनके सत्यशोधक रुप का परिचय देना प्रस्तुत लेख का प्रमुख उद्देश्य है।

11 अप्रैल, 1827 में पुना जिले के धनकवडी इस गाँव में चिमणाबाई और गोविंदराव फूले इस दाम्पत्य ने ज्योतिबा नामक पुत्र को जन्म दिया। ज्योतिबा फूले नौ महिने के थे तब उनकी माता का देहांत हो गया। तभी से उनकी परवरिश विधवा बहन सगुणाबाई क्षीरसागर ने की। उनका मूल गाँव महाराष्ट्र के सातारा जिले मे कटगुण यह है। उनका उपनाम गोऱ्हे था। उनके पिताजी फूलों का व्यापार करते थे इसीकारण उनका उपनाम फूले हो गया। उनके पिताजीने ईसवी 1841 में स्कॉटीश मिशन के अँग्रेजी स्कूल में भेजा था 1847 ईसवी तक शिक्षा वही हुई। उनका विवाह ईसवी 1840 में पुना जिले के धनकवडी इस गाँव के झगडे पाटील की कन्या सावित्री के साथ हुआ था।

महात्मा फूलेजी किसी एक ब्राम्हण मित्र के शादी में गये थे। तब उन्हें शूद्र कहकर शादी मंडप से अपमानित करके बाहर किया था। इसी घटना के कारण उन्हें भारतीय जाति व्यवस्था पर बहुत घुस्सा आया था। बाद में थॉमस पेन के मुनष्य के हक (Rights of Man) इस ग्रंथ से वे बहुत प्रभावित हुए। ये दो बातें उनके जीवन में क्रान्ति लाने में कारण बनी।

महात्मा ज्योतिबा फूले ने पुना में ईसवी 1848 में लडकियों का पहला स्कूल खोलकर क्रान्तिकारी कार्य की शुरुआत की। यह करते समय उन्हें समाज से बहुत विरोध हुआ। लोग उन दोनों पति–पत्नी को गालियाँ देते, शरीर पर पत्थर, कीचड तथा गोबर फेंकते। इतना होनेपर भी उन्होंने अपना कार्य जारी रखा। इस कारण उनके पिता जी ने गुस्से में आकर महात्मा फूलेजी को तथा उनकी पत्नी सावित्री इन दोनों को घर से बाहर निकाल दिया। तब उन्हे इसी कठीन प्रसंग में उनके दोस्त उस्मान शेख ने पूना के गंजपेठ में बालिकाओं के शिक्षण के लिए जगह, रहने के लिये अपने ही घर में थोडी जगह तथा संसार के लिए कुछ आवश्यक चिजे भी दी थी। फूलेजी को ख्रिस्ती तथा इस्लाम धर्म बहुत प्यारे थे। इसीलिए इन धर्मोंसे प्रभावित होकर उन्होंने इन धर्मों की विश्वबंधुत्व तथा सामाजिक समता इन दो सिद्धांतो पर जोर दिया।

मे. कॅंडी के अध्यक्षता में अच्छा शिक्षा कार्य के कारण सरकारी शिक्षा विभाग से उन्हें ईसवी 1852 में सम्मानित किया तथा स्कॉटीश मिशनरी स्कूल में अर्धकाल के लिये मास्टरी की नौकरी भी ईसवी 1854 में की थी। लडकियों की कम उम्र में शादी होने के कारण तथा उन लडकियों के पतियों की उम्र जादा होने के कारण वह लडकियाँ कम उम्र मे ही विधवा हो जाती थी। ऐसी लडकियों पर समाज के और घर के लोगों से ही शोषण, अन्याय–अत्याचार होते थे। ऐसे विधवा नारियों के लिये

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

विधवा पुनर्विवाह जैसा पवित्र कार्य किया। विधवा नारियों के सिर मूँडवाए जाते थे। तो फूलेजीने नाभिक लोगों को समझाकर उन लोगों के विचारों में परिवर्तन करते हुए उनका हडताल करवाया, इसीकारण विधवा नारियों का सिर मूंडवाना यह प्रथा बंद हो गयी। इसके साथ शोषित पीडित विधवा नारियों के पेट में नाजायज बच्चा होने के कारण वह विधवा नारियाँ आत्महत्या करती या जन्मे हुए बच्चे को मार डालती। ऐसे बच्चों की जान बचाने के लिये महात्मा ज्योतिबा फूले ने ईसवी 1863 में बालहत्या प्रतिबंधक आश्रम की स्थापना की। काशीबाई नातू नामक विधवा ने एक बच्चे को जन्म दिया था, उस बच्चे को महात्मा फूले ने गोद लेकर उसका पालन पोषण किया और यशवंत यह नाम रखा। आगे जाकर वह लडका डॉक्टर बन गया।

ईसवी 1868 में अकाल के कारण सुखा पडा था। शुद्र अतिशूद्रों को पानी नही मिल रहा था। ब्राम्हण पंडित तथा सवर्णोंने अपने कुएँ पर दलितों को आने के लिए प्रतिबंध लगाया था। प्रतिबंध के कारण शूद्र–अतिशूद्रों को अत्यंत कठिनाईयों का सामना करना पड रहा था। तब महात्मा फूले ने अपने घर का कुआँ शूद्र अति शूद्रों के लिये खुला किया था।

महात्मा फूले समाजसुधारक के साथ एक महान साहित्यिक भी थे। उनका साहित्य समाजसुधार के लिए लिखा गया प्रगतिवादी साहित्य था। ईसवी 1855 में तृतीय रत्न नामक नाटक उन्होंने लिखा। शिक्षा यह मनुष्य की तीसरी आँख है यह संदेश जनता तक पहुँचाने का कार्य इस नाटक से किया। शूद्र–अतिशूद्र, अनपढ अज्ञानी थे और इसी का फायदा यह ब्राम्हण–पण्डा पुरोहित कैसे लेते है इसका विश्लेषण महात्मा फूले ने अत्यंत सुंदर शब्दों में किया है। छत्रपती शिवाजी महाराज लोगों में भेदभाव नही रखते थे, जातिभेद नही करते थे। वे समतावादी, आशावादी, लोगों का भला सोचनेवाले, दूरदृष्टि व आदि उनकी विशेषताओं को महात्मा फूले जी ने पोवाडे के माध्यम से अभिव्यक्त करते थे।

छ.शिवाजी के पोवाडा (वीरगाथा काव्य) में आदर्श राजा के सहिष्णु रुप को दिखाया है। 1869 ईसवी में महात्मा फूले जी ने ब्राम्हणांचे कसब (ब्राम्हणोंका चातुर्य) यह रचना काव्यरूप में की। इसमें ब्राम्हणों के कर्मकांडी तथा पाखंडी रुप को चित्रित किया है। 1 जून 1873 में गुलामगिरी नामक ग्रंथ लिखकर शूद्रों की मुक्ति का घोषणापत्र प्रकाशित किया। यह ग्रंथ उन्होंने अमेरिका के निग्रो लोगों की मुक्ति दिलानेवाले को अर्पण किया है।

ईसवी 1883 में महात्मा फूले जी ने शेतकऱ्यांचा आसूड (किसनों के कोडे) इस ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ में उन्हों ने अविद्या के कारण ही किसानों का शोषण हुआ है ऐसा स्पष्ट करते हुए वे कहते है –

'' विद्या बिना मति गयी। मति बिना नीति गयी।।
नीति बिना गति गयी। गति बिना वित्त गया।।
वित्त बिना शूद्र गये। इतने अनर्थ एक अविद्याने किये।। ''

महात्मा फूले की महाराज सयाजीराव गायकवाड जी से ईसवी 1884 में भेंट हुई थी। तब उनका किसानों का कोडा यह ग्रंथ देखकर सयाजीराव गायकवाड उनपर इतने प्रभावित हुये थे कि महाराज सयाजीराव गायकवाडजी ने महात्मा फूलेजी को महाराष्ट्र का 'बुकर टी वॉशिंग्टन' की उपाधि दी।

महात्मा फूलेजी ने शूद्रों अतिशूद्रों को शोषण, अन्याय अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए हिंदू वैदिक धर्म को नकारते हुए 23 सितम्बर, 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना की। इसमें वैदीक धर्म ग्रंथ के झूठेपन को प्रस्तुत किया तथा ब्राम्हणों की गुलामी से दलित वर्ग को मुक्ति दिलाई। ईसवी 1887 में सत्यशोधक समाजोक्त पद्धति से विवाहों का आयोजन किया। इससे किसीका भी धार्मिक शोषण नहीं होगा ऐसी सलाह भी दी। इस महापुरुष का तथा उसके कार्य का गौरव करना चाहिए,

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

ऐसा मुंबई के कुछ सत्यशोधकों को लगा तब 11 मई, 1888 में मुंबई के कोलीवाडा के एक बडे हॉल में भव्य समारोह में राष्ट्रपिता ज्योतिबा फूले को महात्मा यह उपाधि अर्पण की।

महात्मा फूलेजी ने ईशारा की रचना ईसवी 1885 मे की। न्या.रानडेजीने पूना में खेती की स्थिति इस विषयपर अपने भाषण मे तीस सालों से किसानों की स्थिति ठिक है ऐसा कहा था। इन्हीं विचारों का खंडन महात्मा फूलेजी ने ईशारा रचना में किया है। विवेक, नीति और मानवधर्म समझाने के लिये महात्मा फूलेजी ने सार्वजनिक सत्य धर्म इस ग्रंथ की रचना की। महात्मा फूले जी की मृत्यु के बाद ईसवी 1891 में यह ग्रंथ प्रकाशित हुआ। ज्योतिबा फूले को लकवे की बीमारी हुई, जिसमें उनका दाहिना हाथ काम नहीं कर सका इसलिए उन्होंने यह ग्रंथ बायें हाथ से लिखकर ईसवी 1889 में पूरा किया।

महात्मा फूले का साहित्यिक कार्य उनके सामाजिक कार्य की तरह अत्यंत प्रभावशाली रहा है। जो वाणी में वही करनी में इस तत्व के अनुसार उनका जीवन रहा है। सत्य की खोज करते हुए शूद्र अतिशूद्र, नारी आदि पर होनेवाले जुल्मों को जड से उखाडने के लिए महात्मा फूले ने अपने पूरे जीवन में कठिनाईयों का सामना किया।

ज्योतिबा फूले शिक्षा प्रेमी तथा अध्ययनकर्ता होने के कारण उनकी विचारधारा विज्ञानवादी थी। सत्यता उनके जीवन का मूलअंग बन गया था। असत्यता, अवैज्ञानिकता उनके चिंतन में कहीं भी दिखाई नहीं देता। वे जीवनभर सत्यता का पाठ करते रहे। इसलिए वे सत्य का शोध करनेवाले सत्यशोधक कहलाएँ। उन्होंने 25 दिसंबर 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना की। उनके सत्यशोधक समाज के उद्देश्य निम्ननुसार वैज्ञानिकता और शास्त्रशुध्दता परिचय देते है –

1. ''ईश्वर एक है। वह सर्वव्यापी, निर्गुण, निर्विकार और सरल स्वरुप है। वह प्राणीमात्र में व्यापक है।''
2. ''प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर भक्ति का अधिकार है। सर्वसाक्षी परमेश्वर की प्रार्थना और चिंतन के लिए किसी मध्यस्थ की, किसी दलाल की आवश्यकता नहीं है।''
3. ''मनुष्य जाति के गुण उसकी श्रेष्ठता प्रमाणित करते है।''
4. ''कोई भी ग्रंथ न तो ईश्वर प्रणीत है, न वह पुर्णरुपेण प्रमाण के रुप में उपलब्ध है।''
5. ''परमेश्वर शारीरिक रंगरुप में अवतार धारण नहीं करता।''
6. ''पुनर्जन्म, कर्मकांड, जप–तप या धर्म गोष्ठियाँ अज्ञान मूलक है।''

थॉमस पेन के क्रान्तिकारी विचारों से प्रभावित होकर क्रान्ति की शुरुआत करनेवाले सत्यधर्मी महात्मा फूलेजी समाज सुधारक, प्रतिभावंत लेखक, दार्शनिक और क्रान्तिकारी, नारियों के शोषण का दमन करनेवाले, शूद्र अतिशूद्रों को सत्य की पहचान करानेवाले, शिक्षा महर्षी, कृषितज्ञ, जातिप्रथाएँ, नारी उत्थान, विधवाओंका पुनरुत्थान एवं अस्पृश्यता निवारण में महत्त्वपूर्ण योगदान, बालहत्यापर प्रतिबंध, अंधश्रध्दाओं का निर्मूलन, धर्मांध, सनातनी, स्वार्थान्ध, ब्राम्हणों का चातुर्य जानकर उनपर विवेकी कोडे बरसानेवाला, शिक्षा के प्रति सख्त कानून बनाने के लिए ब्रिटीशोंको मजबूर करनेवाला इसीतरह बहुआयामी व्यक्तित्व सत्यधर्मी महात्मा ज्योतिबा फूलेजी की विशेषताएँ देखने को मिलती है।

पूरी दुनियाँ में मानवप्राणी सत्यवर्तन किये बिना सुखी नही होगा तथा दुनिया के सभी लोग सुखी रहे, ऐसा कहते हुए, 28 नवम्बर, 1890 में उनका देहान्त हो गया। बाद में 14 अप्रैल, 1891 में डॉ.बाबासाहब आम्बेडकर का जन्म हुआ। एक महात्मा का दुनिया से चले जाना और दुसरे महापुरुष का वही कार्य लेकर जन्म होना यह घटना ऐसा साबित करती है कि महात्मा फूलेजी ने अपने सत्यधर्मी कार्य के क्रान्ति की मशाल डॉ.बाबासाहब के हाथ में सौंप दी।

महात्मा फूले ने सत्य के विचारों को बोने का कार्य किया, राजर्षी शाहू महाराज ने बोये हुये बीज का बडा पेड बनाया तथा उस पेड को फूलों, फलों से भरने का कार्य डॉ.बाबासाहब ने किया। डॉ.

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

बाबासाहब ने कठिनाईयों का सामना करते हुए दीन दलित जनता को न्याय देने का कार्य किया। स्वातंत्र्य, समता, बंधुता और न्याय इस समताधिष्ठित चतुःसूत्रीपर शूद्र–अतिशूद्र, नारी को गुलामी से मुक्ति दिलाने का कार्य किया।

आधुनिक काल में आसारामबापू जैसे पाखण्डी साधू संत समाज में फैले हुए है। उन पाखण्डी संतों द्वारा नारी वर्ग का शोषण हो रहा है, वे समाज में अंधविश्वास बढा रहे है, जिसके कारण देश की बहुत हानि हो रही है, आज भी महात्मा फूले जैसे समाजसुधारकों के विचारों की आवश्यकता है। अंधविश्वास निर्मुलन करने वाले परिवर्तनवादी विचारक डॉ.नरेंद्र दाभोलकर जी की हत्या हुई। सनातनी लोग, पूरोगामी, परिवर्तनावादी विचारों को खत्म करने में लगे हैं। लेकिन देश से हितकारी पूरोगामी परिवर्तनवादी विचार कभी खत्म नही होगे। आज भी निर्भया जैसी लडकी पर देश की राजधानी में ही सरकारी बस में सामुहिक बलात्कार होता है, इसका अर्थ यह है कि, आज भी देश की नारी सुरक्षित नही है। वर्तमान में फूले–शाहू–आम्बेडकरी विचारों की इस देश को आवश्यकता है, दुनियाँ में सबसे समृध्द संविधान हमारे देश का होते हुए भी दलितों का शोषण होता है, क्योंकि संविधान उन्हीं की हाथों में है, जो सिर्फ अपना स्वार्थ देखते है, आज फिर से एकबार क्रान्ति की आवश्यकता है। संविधान की ताकत से हम समाजसुधार कर सकते है। दीन दलित वर्ग में विश्वास दिलाना हमारा परमकर्तव्य है। फूले–शाहू–आम्बेडकरी विचारों को बुलंद करते हुए हम एक नए समाज की निर्मिति कर सकते है। जिसमें दुःख, यातनाएँ, कर्मकांड, अंधविश्वास विरहीत समाज होगा। ऐसा महात्मा फूले के सपनों का आदर्श समाज हम बना सकते हैं।

संदर्भ सूची

1) महात्मा ज्योतिराव फूले विचार आणि वाङमय – श्रीराम गुदेकर, प्रकाशन – प्रतिमा प्रकाशन पुणे, 1992
2) महात्मा ज्योतिराव फूले समग्र वाङमय, संपादक – धनंजय कीर, स.ग.मालसे, प्रकाशन – मराठी राष्ट्रीय साहित्य संस्कृति मंडळ, मुंबई 1969
3) गुलामगिरी – महात्मा फूले, 1873
4) शेतकऱ्यांचा आसूड : महात्मा फूले
5) दलित साहित्य वेदना व विद्रोह – भालचंद्र फडके, प्रकाशन – विद्या प्रकाशन पुणे
6) अखंड – महात्मा फूले
7) सत्सार – अंक 1 व 2 – महात्मा फूले
8) सार्वजनिक सत्यधर्म – महात्मा फूले, 1891
9) ब्राह्मणांचे कसब – महात्मा फूले, 1869
10) दलित साहित्य उद्‌गम व विकास – डॉ.योगेंद्र मेश्राम, प्रकाशन – श्रीमंगेश प्रकाशन – नागपूर
11) दलित साहित्य एक अभ्यास – अर्जुन डांगळे, मराठी राष्ट्रीय साहित्य संस्कृति मंडळ मुंबई, 1978
12) फूले आंबेडकर संशोधनातील प्रदुषणे – वसंत मनु, प्रकाशन – सुगावा प्रकाशन, पुणे, 1993
13) दास शूद्रांची गुलामगिरी – शरद पाटील, खंड 1, प्रकाशन – प्राज्ञ प्रकाशन, वाई
14) वादळाचे वंशज – गंगाधर पानतावने, प्रकाशन – प्रचार प्रकाशन, कोल्हापूर